सफलता की कहानी

कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 102

उच्च तकनीकी अपनाकर आलू बीज उत्पादक बननें की सफलता की कहानी किसान की जुबानी : श्री धर्मेन्द्र कुमार, जमुनापुर, नालंदा

महेन्द्र पाल,
सहायक प्राध्यापक–सह–कनीय वैज्ञानिक, उधान–फल,
नालंदा उधान महाविधालय, नूरसराय, नालंदा, बिहार, भारत।
Email Id: apsingh_coh@yahoo.com

नाम	:	श्री धर्मेन्द्र कुमार
पिता का नाम	:	श्री राजेंद्र कुमार
उम्र	:	43 साल
शिक्षा	:	12वी पास
ग्राम	:	जमुनापुर
पंचायत	:	डोइया
ब्लाक	:	नूरसराय
पोस्ट	:	कैरी मियार
सम्पर्क सुत्र	:	8340268289

श्री धर्मेन्द्र कुमार ग्राम जमुनापुर, जिला नालंदा, बिहार राज्य के एक मध्मम वर्गीय किसान है। जिनके पास अमुमन तीन एकड रकबा है। मुख्य रूप से देखा जाये तो श्री धर्मेन्द्र कुमार एक सफल सब्जी उत्पादक है एवं गृह आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समसामायिक अन्य कृशिगत फसलों की भी खेती करते है। देखा जाए तो श्री धर्मेन्द्र कुमार जी के पास कृशि के अलावा अन्य काई जीविकोपार्जन का अन्य साधन नही है। आज कल की बढती महगाई के क्रम मे सिर्फ सब्जियों को उगाकर घर की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा कर पाना बहुत असंभव सा प्रतीत होता है। श्री धर्मेन्द्र कुमार जी आत्मिक रूप से परेशान थे एवं अपनी कृशि में बदलाव लाने के बारें में चिंतित थें। सब्जियो के साथ–साथ श्री कुमार जी आलू का भी उत्पादन बढें पैमाने पर किया करते है। किसी जानकर सूत्रों से श्री धर्मेन्द्र जी के संज्ञान में आया कि पास में ही स्थित नालंदा उधान महाविधालय में जलवायु अनुकुल कार्यक्रम के अर्न्तगत उच्च तकनीकियों द्वारा आलू के बीज उत्पादन पर काम किया जा रहा है। अधिक जानकारी पाने के लिए श्री कुमार ने महाविधालय में सम्पर्क किया एवं इस विशय पर होने वाले प्रशिक्षणों में भाग लेने की इच्छा जाहिर की। कृषक की उत्सुकता को ध्यान में रखते हए उन्हें महाविधालय में तकनीकी प्रशिक्षण दिये गयें एवं बिहार कृशि विष्वविधालय, अर्न्तराश्ट्रीय आलु केन्द्र, अमेरिका द्वारा प्रायोजित उच्च तकनीकियों द्वारा आलु बीज उत्पादन पर एक्सपोजर विजिट–सह–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अर्न्तगत करनाल (हरियाणा), सिलॉग (मेघालय), बैगलुरू (कर्नाटक) एवं इन स्थानों के प्रगतिशील कृशकों के प्रक्षत्रों पर तकनीकी कों सजीब देखने का अवसर प्रदान किया गया। श्री धर्मेन्द्र जी उच्च तकनीकियों जैसे मिनीटियबर द्वारा एवं शीर्श कर्तन द्वारा रोगरहित आलु बीज उत्पादन के प्रत्यक्षक प्रमाण देखकर काफी प्रभावित हुए एवं इन तकनीकियों को अपनें खेतो पर उतारने का निश्चय किया। बर्श 2022–23 में उन्होने गॉब के अन्य किसानों का समूह बनाकर अधिक मात्रा में रोगरहित आलु बीज करनाल (हरियाणा) सें सामुहिक रूप सें प्राप्त किया, रोगरहित आलु बीज उत्पादक बननें के क्रम मे पहल की एवं सफलता प्राप्त की। आज बो अन्य किसानों के लिए प्रेरणाश्रोत है साथ ही अपने अनुभब से अन्य लोगों को भी प्रशिक्षित कर रहे है।